JGi JAIN DEEMED-TO-BE UNIVERSITY | CENTER FOR MANAGEMENT STUDIES

आभास

एक नया एहसास

हिंदी विभाग की पत्रिका अंक 11 वर्ष–२०२२

जीवन में हजारों लड़ाइयाँ जीतने से अच्छा है कि तुम स्वयं
पर विजय प्राप्त कर लो। फिर जीत हमेशा तुम्हारी होगी,
इसे तुमसे कोई नहीं छीन सकता।

www.cms.ac.in

हिंदी विभाग द्वारा

आभास- २०२१

- एक नया एहसास

अंक - ११

डॉ चैनराज रॉयचंद
अध्यक्ष
जैन (अभिमत पात्र विश्वविद्यालय),बेंगलूरु.

अध्यक्ष का सन्देश-

सफलता प्राप्त करने का सबसे सरल मन्त्र है अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना और समय को अपनी मुट्ठी में बाँध कर रख लेना। जै.वि.वि. सी.एम.एस. इस अर्थ में अपने विद्यार्थियों को एक संपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। शिक्षा सिर्फकिताबी ज्ञान पर आधारित नहीं होंती, बल्कि उसमें व्यावहारिकता और कलात्मकता दोनों ही समाहित होती है। युवा पीढ़ी के समक्ष अनेक सोपान हैं जो उन्हें सफलता की उँचाइयों तक पहुँचा सकती है। अतः मानसिक और बौद्धिक दृष्टिकोण मेंसतर्कता बरतना ज़रूरी है।

'**आभास**' पत्रिका के नविन दृष्टिकोंण के ग्यारह वें प्रकाशन पर मैं यही सन्देश देना चाहुँगा कि आत्मविश्वास और आत्मबल को टूटने न दें। आप सफलता की उड़ान भरेंगे ।

डॉ. दिनेश नीलकंठ
निदेशक, सी एम एस
जैन(अभिमत पात्र विश्वविद्यालय),बेंगलूरु.

निदेशक की कलम से-

सी.एम.एस. परिवार के प्यारे सदस्यों,

'आभास' पत्रिका के माध्यम से आप सभी से बात करते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है। 'आभास' पत्रिका आपकी क्षमता, आपकी सोच आदि को समझने की एक नयी दृष्टि प्रदान करता है। पत्रिका के लिए लगी मेहनत, लगन और निष्ठा, निःसंदेह सराहनीय है। मैं सारे सदस्यों, संपादक मंडल और तमाम सहयोगियों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सदैव कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर रहेंगे।

अनुक्रमणिका

१. सम्पादकीय ५

२ . सह सम्पादकीय पत्र ६

३ . अनुच्छेद ७

४ . कहानिया ९

५ .शायरी १७

६ . कला १८

७ . चित्र प्रदर्शन २२

८ . संकल्प एक नयी पहल २४

९ . लास्या २६

१० . महाविद्यालय परिसर से ३२

सम्पादकीय

बूँद बूँद इकट्ठा होकर सागर बनता है। बूँदों में सागर है और सागर में बूँदे। सागर की हर बूँद उसका हिस्सा है, उसका अंग है क्योंकि बूँदों से ही सागर का अस्तित्व है। इसी सागर में जीवन के दर्शन होते हैं । हर महान कार्य के पीछे एक छोटा प्रयास अवश्य होता है। यही प्रयास सागर के उन छोटे-छोटे बूंदों के समान है जो सागर की महानता का द्योतक बनते हैं।साहित्य भी सागर के समान है। एक सहृदय व्यक्ति की संवेदनाओं के लिखित रूप को साहित्य कहा जा सकता है। व्यक्ति की यह संवेदना कविता, कहानी, जीवनी, गीत, गजल आदि रूपों में अभिव्यक्त होती हैं । यह उसकी सहृदयता और भावुकता का संकेत मात्र नहीं बल्कि उसकी अभिव्यक्ति का साधन भी है। उसके रोते- हँसते ह्रदय की अकेली मुस्कान भी।

आधुनिक तकनीकी युग में मनुष्य नई नई तकनीकों के पीछे भागने लगा है यह उसकी अनिवार्यता भी है किंतु इस दौड़ में अपने लोग और अपने समाज के लिए उसके ह्रदय में कंपन अवश्य होता है। इस कंपन को शब्द रूप देने का प्रयास ही यह 'आभास' पत्रिका है। छात्रों की साहित्यिक रुचि को जीवित रखना और उसके लिए मंच प्रदान करना इस पत्रिका का मूल मंत्र है।

हिंदी विभाग की ओर से प्रकाशित होने वाली 'आभास' पत्रिका हमारी साहित्यिक गतिविधियों तथा सामाजिक अभिरुचि का संकेत भी है।

प्रस्तुत 'आभास' पत्रिका के 11 वें अंक में छात्रों की साहित्यिक अभिव्यक्ति और सामाजिक अभिरुचि को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उनका यह छोटा प्रयास भविष्य में सुंदर एवं सजग रूप धारण करें - यही शुभकामना मैं देना चाहूंगी। भाषा एवं साहित्य संबंधी आभास को नया आकार, नया रूप और नई अभिव्यक्ति प्रदान कर आभास को 'एक नया एहसास' बनाने वाले प्रत्येक सहयोगी को अनंत धन्यवाद। आशा है यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रिय अवश्य लगेगा।

विभागाध्यक्षा

सुधा कनकनावर

सहायक प्राध्यापिका

हिंदी विभाग

सी एम एस

जैन (अभिमत पात्र विश्वविद्यालय)

सह संपादकीय-पत्र

सेंटर फॉर मैनजमेंट स्टडीज़, जैन(अभिमत पात्र विश्वविद्यालय) के प्रतिभाशाली विद्यार्थी अपनी निश्छल एवं निष्पक्ष शाब्दिक अभिव्यक्ति में किसी भी प्रकार से पीछे नहीं है। चाहे प्राकृतिक आपदा हो, भ्रष्टाचार हो या संवेदनाओ का सूखता सागर, वैज्ञानिक प्रगति की दिशा में बढ़ते कदम है, सबके प्रति सजग एवं संवेदनशील हैं। आशा है हमारे प्रबुद्ध पाठक इन नवोदित रचनाकारों की खामियों को अनदेखा कर उनके उत्साह को अवश्य सराहेंगे। यह अंक अपने पाठकों का भरपूर मनोरंजन कर सकेगा . . . आपके सुझाव ही हमारा संबल है ।

सह संपादकीय

राजुल सुराणा

तीसरा वर्ष

ज़िन्दगी की कड़वाहट - खुद पे विस्वास रखना जरुरी है।

अक्सर ज़िन्दगी की छोर पर कहीं न कहीं कोई ऐसी परेशानी हमारे सामने आ जाती है, जहाँ हम हिम्मत हारने लगते हैं । हमारे अंदर जो विश्वास होता है उसे खोने लगते हैं । लेकिन हम कभी ये नहीं सोच पाते की क्या ऐसे हिम्मत और विस्वास खो देने से हमारी शख्सियत ठीक हो जाती या हो पायेगी ? इसका जवाब हम सब जानते हैं कि - "नहीं"। जैसे एक मछली पानी के अंदर ही अपनी सारी खूबिया दिखा सकती है कुछ वैसे ही ये हिम्मत और विस्वास आपके काम उन परेशानियों में ही आएंगी।आप जहाँ फँसे हो, जहाँ से आप निकलना चाहते हो या जो भी कुछ है जिसे आप ठीक करना चाहते हो। वैसे तो हम सब जानते है कि ज़िन्दगी है तो परेशानियाँ भी आएँगी लेकिन अक्सर जब हकीकत में हमारे सामने कोई परेशानी आती है तो हमें ऐसा लगने लगता है की हमारे साथ ही क्यों ? हम बचपन से कहावतें सुनते जरूर आए है कि जो होता है अच्छे के लिए होता है लेकिन कभी इनसब को असली समय पर महसूस नहीं कर पाते। अब करे भी तो क्यों हम इंसान है और इंसान को सारी चीज़े तब तक अच्छी लगती है, जब तक चीज़े उसके हिसाब से हो |

ख़ुशी अपने ज़िन्दगी में सबको चाहिए वो सुकून सबको चाहिए लेकिन हम ये मानने को तैयार है ही नहीं कि इस ख़ुशी और सुकून का जो रास्ता है वह परिश्रम, परेशानी और मुस्किलों से ही गुजरता है। इसलिए हमें हिम्मत कर अपनी परेशानियों को अपनाना होगा, अपने अंदर सब ठीक होगा ही इस बात का यकीन दिलाना ही होगा। विश्वास रखना होगा कि जो भी है वह एक काले बदल की तरह हट जायेगा लेकिन जब हटेगा तो एक नयी रौशनी आएगी जो आपकी ज़िन्दगी को उजालों से भर देगा। फिर भी कहीं अगर मन में कोई बात आपको परेशान करे तो ये बात याद रखने की जरुरत है कि अगर सब कुछ इतनी आसानी से सब को मिल जाता तो उसका वो मज़ा ही क्या रहता। अगर सबके लिए यह सब इतना आसान होता तो सबको वैसा ही मिल जाता जैसा वो चाहते लेकिन ऐसा होता नहीं है, आखिर जब तक खाने में कड़वाहट का पता न चले तब तक कुछ मिठास की चाहत नहीं होती।

-अभिनव राज
बी.ए.जे, III -वर्ष

जुबान का पक्का

मनुष्य अपने काम-काज, प्रतिभा आदि में कितना ही कुशल क्यों न हो, मगर उसको चरित्र के आधार पर ही नापा जाता है। अगर एक आदमी का चरित्र है तो उसे अच्छा माना जाता है, और अगर उसका चरित्र बुरा है, तो उसके पास सब कुछ होते हुए भी वह बेकार है । चरित्र की शोभा बढ़ाने के लिए मनुष्य को "जुबान का पक्का होना चाहिए। अगर हम अपने वचनों को अपने प्राणों से भी ऊपर रखते हैं, तो हम जुबान के पक्के कहलाते हैं। तुलसीदास जी ने भी अपनी एक अनोखी रचना में भी यही बात कही है।

"रघुकुल रीत सदा चली आई,
प्राण जाए पर वचन न जाए।"

अर्थात रामायण के समय से यह प्रथा चली आ रही है। श्री राम अपने पिता के वचन रखने के लिए चौदह वर्ष वनवास स्वीकार करते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि यदि अपना वचन निभाते प्राण भी निकल जाए, तो इसे सहर्ष स्वीकार करो। वचनों को पूरा करना व उस पर अड़े रहना, यह परंपरा पौराणिक काल से चली आ रही है, और इसी कारण भारत एक चरित्रवान देश कहलाया गया है।

सत्यवादी हरिश्चंद्रजी का नाम आज तक सच्चाई की मिसाल देने के लिए लिया जाता है। उनका भी यही मत था कि प्राण जाए पर वचन न जाए। उनकी सत्य के प्रति इस निष्ठा के कारण ही सैकड़ों साल बाद भी वे सत्य के प्रतीक बने है।

जुबान का पक्का होने से हम सच्चे और निष्ठावान कहलाते हैं। इससे हमारा दूसरों के साथ संबंध अच्छा रहता है, बैर आदि की कोई बात उत्पन्न ही नहीं होती। इससे हम अपना भरोसा दूसरों के साथ मजबूत बना सकते हैं ।

जैसे हर चीज के केवल अच्छे प्रभाव नहीं होते, वचन के भी कुछ दुष्प्रभाव हैं। जल्दबाजी में दिया हुआ वचन आगे जाकर नुकसान पहुंचाते हैं। वचन पर अड़े रहने की परंपरा को यदि हम कुछ कारणों से निभा नहीं पाते, तो हमारी मानसिक शांति भंग हो सकती है। इसलिए जुबान देने से पहले हमें सोच लेना चाहिए कि हम उसे कितने अच्छे से निभा सकते हैं ।

"जुबान का पक्का हूँ मैं,
अपनी कहीं हर बात याद रखता हूँ ।
इंसानियत जिंदा है मुझमें,
अपनी औकात जानता हूँ ।।"

-जिनेश कुमार
बी बी ए, II -वर्ष

अंत भला तो सब भला

आज मैं आपको एक कहानी सुनाने जा रही हूं जो अंत भला तो सब भला पर आधारित है. एक बार एक राजा जंगल में जा रहा था, तो वह राजा रास्ता भटक गया और भटकते, भटकते वह एक कुटिया में जा पहुंचा जहां पर उस राजा का बहुत सत्कार किया गया, भोजन कराया गया और सम्मान किया गया जिससे राजा बहुत खुश हुआ और उस कुटिया में रहने वाले व्यक्ति को इनाम देने के बारे में सोचने लगा, बाद में उस राजा ने यह फैसला किया की उस व्यक्ति को इनाम मिलना चाहिए| उस राजा ने उस व्यक्ति को पास बुलाकर कहा कि मैं आपसे बहुत खुश हूं मैं आपको इनाम देना चाहता हू राजा ने उस व्यक्ति को ऐसी जमीन देने की बात बताई जिस जमीन में चंदन के पेड़ लगे हुए थे और वह जमीन उस व्यक्ति को दे दी जिससे वह व्यक्ति अपने परिवार का भरण पोषण कर सके, लेकिन उस व्यक्ति ने चंदन की लकड़ी का उपयोग करने की बजाए चंदन की लकड़ी को जलाकर उस लकड़ी का कोयला बनाकर शहर में बेचना शुरू कर दिया.

और धीरे-धीरे सारे पेड़ उसने जला दिए अंत में उसके पास सिर्फ एक पेड़ बचता है और इसके बाद बारिश का समय आ जाता है। जिस कारण से वह उस पेड़ को नहीं काट पाता है. एक व्यक्ति उसके पास आकर उस पेड़ के बारे में पूछता है कि आप इस पेड़ की लकड़ी को तोड़कर मुझे बेचना चाहते हो तो में इस पेड़ की लकड़ी को के लिए तैयार हूं और लकड़ी के बदले में आपको धन देने के लिए तैयार हूं।

जब उस व्यक्ति को यह पता चला कि इस व्यक्ति ने चंदन के पेड़ को जलाकर कोयला बनाकर बाजार में बेच दिया है तब उस व्यक्ति ने उसे समझाया कि चंदन का क्या महत्व होता है और वह व्यक्ति समझ गया और उसको पछतावा होने लगा कि अगर में चंदन के पेड़ों को नहीं जलाता तो कितने वर्षों तक मेरे परिवार का भरण पोषण आसानी से होता रहता और वह व्यक्ति सोचने लगा की अंत भला तो सब भला।

- याशिका जैन

समय- एक मूल्यवान वस्तु

समय इस दुनिया का सबसे कीमती वस्तु है। समय कभी भी किसी के लिए नहीं रुकता । समय धन से भी ज्यादा कीमती हैं। खर्च किया हुआ धन को मेहनत से वापस प्राप्त किया जा सकता है लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। यदि समय को सही तरह से उपयोग करोगे तो जीवन में सफलता पाओगे और उसका दुरुपयोग करोगे तो अपना भविष्य बरबाद करलोगे | समय बहुत ही मूल्यवान वस्तु है। कोई इसके सामने घुटना टेंक सकता है लेकिन उसे हरा नहीं सकता। समय बहुत ही शक्तिशाली होता है। कोई भी एक पल में अमीर हो सकता है और कोई भी एक पल मे गरीब हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति समय कि अहमयित को नहीं समझता है तो समय भी उस व्यक्ति की अहमियत को नहीं समझता है। इस संसार में सबकुछ समय के अनुसार चलता है और समय के अनुसार बदलता है।

तनिक सोचिए, यदि रोज सुबह जागते ही आपके बैंक खाते में 86,400 रुपये जमा हो जाते और चाहे आप उसे खर्च करो या नहीं, दिन के अंत में वह पैसे चले जाते। अगले दिन ₹36.5000 मिलते तो आप उन पैसों को अपनी शक्ति के अनुसार खर्च करने की कोशिश करते क्योंकि आप जानते हैं कि अगले दिन आपको फिर 86,000 मिलेंगे। ठीक वैसे ही, आपको हर दिन 86,400 सेकेंड मिलते हैं। फिर आप क्यों उसको बर्बाद करते हैं। अगले दिन फिरसे आपको यह समय मिलेगा, जो समय बीत गया उसे वापस प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए हर दिन और हर पल का सदुपयोग करें और उस में से कुछ अच्छा करे।

- प्रिया दरक
बी बी ए, I -वर्ष

बड़ा शहर

एक अन्ज़ान शहर में आके अपना नाम बनाने की कोशिश करना,
एक नया एशियन बनाने की कोशिश करना, इतना भी आसान नहीं होता तो बस
इन्ही चीज़ो को मह्सुश करते हुए मैंने लिखा है बड़ा शहर

ये सड़कों की आवाज़ मुझे अक्सर याद दिलाती है कि
मैं घर से दूर हूँ ,
ऐसा नहीं है कि जाना नहीं चाहता मैं वापस
लेकिन क्या करूँ, खुद का नाम बनाने आया हूँ यहाँ
इसलिए तो अकेला परिंदा सा मैं मज़बूर हूँ
ख्वाइशें काफी बड़ी हैं जिन्हे मुझे हकीकत बनाना है।
खुद को खुद से संभाल कर मुझे इसे बहुत कुछ सीखना है
ताकि भीड़ -बाड़ भरे इस शहर में
थोड़ा मैं भी जाना जाऊँ
मेहनत बहुत करूँगा इसके लिए पडा है
बाकी खुद के बारे में मैं खुद क्या कहूँ ।

अच्छा ,
मेरी कमज़ोरियाँ भी बहुत हैं ,
जिन्हे ताकत में बदलना है मुझे
और सुना है मैंने इस बड़े सेहर में काफी लोग मतलबी है,
तो उनसे भी संभलना है मुझे।
पता नहीं मुझे कि कैसे पचानूँगा उन्हें
लेकिन कोशिश अपनी पूरी करूँगा
जितना हो सकेगा उतना ज़िन्दगी के ठोकर भी सहूँगा,
सोचूँगा कि ये सब एक सीख है,
"इस से भी तो बुरा हो सकता है न "
ये तो फिर भी ठीक है।

फिर भी,
अगर हिम्मत हारा,
तो खुद से बातें कर लिया करूँगा।
तुम बेफिक्र रहो,
इस परेशानी की बाढ़ में ,
हौसलों के नाव पे बैठ मैं ये भी पार कर लिया करूँगा।

मानता हूँ,
सफर शायद थोड़ा लम्बा होगा,
लेकिन मैं दुसरों से थोड़ा ज्यादा चल लिया करूँगा,
हर दुख में खुद को खुश करके,
मैं खुशियाँ भर लूँगा ।
और अगर इनसब के बीच कोई बुरा भला कहे तो भी
मैं सुनकर इस बड़े शहर की तरह अनदेखा कर दिया करूँगा।

-अभिनव राज
बी.ए.जे, III -वर्ष

मेरी माँ

जब आया दुनिया में तो सबसे पहले तूने मुझे कलेजे से लगाया।
तू ही थी जिसने मुझे सहलाया और शांत कराया।

न मेरी कोई लिपि थी न ही कोई भाषा, लेकिन जब भी मेरे
मुँह से 'आह' निकली सिर्फ तुझे पता था, मुझे क्या चाहिए था।
फर्श पर रेंगते-रेंगते तूने मुझे चलना सिखाया था।

खुद इतना दर्द सहा और मुझे जनम दिया, बिना किसी
शिकवे, हस्ते हस्ते मुझे बड़ा किया। जब मुझे भूक
लगी तो अपनी थाली से रोटी ले, हस्ते हस्ते, भूक
नहीं है कहकर मुझे दिया।

कोई शब्द, कोई कविता, कोई ऐसी चीज़ बनी ही नहीं है
जो तुझे बयान कर सके मेरी माँ, जता नही सकता,
बता नहीं सकता पर तुझे बेइंतहा चाहता हूँ मेरी माँ |

-रवि बंसल
बी बी ए, I -वर्ष

मुझे पढ़ना है मगर .....

मुझे पढ़ना है मगर .....
मुझे पढ़ना है मगर
इतिहास का जंग ही नहीं
अतीत के किस्से भी सुनने हैं।

शब्दों के जाल ही नहीं
कविताओं के रेशे भी बुन्ने है
मुग़लों की सल्तनत ही नहीं
खयालात की कायनात भी जीतनी है।

शेक्स्पीर के सोनेट्स ही नहीं
कबीर के दोहे भी गुनगुनाने है
हाइड्रोजन ऑक्सायड के फ़ोर्मूले ही नहीं
पानी बचाने के नुस्खे भी अपनाने हैं।

आंकड़ों की पहेलियाँ ही नहीं
कर्मों के हिसाब भी सीखने है
हिटलर -मससुलिनी की कहानियाँ ही नहीं
माओ -लेनिन की दांसताने भी लिखनी है

गांधी की अहिंसा ही नहीं
भगत सिंग की सोच भी समझनी है
टूटे हुए मंदिर-ओ-मस्जिद के टुकड़े ही नहीं
धर्म के नाम पर काटे सर भी गिन्ने है।

मुझे पढ़ना है मगर
स्कूल -कॉलेज की किताबें ही नहीं
दुनियादारी के बदलते चेहरे भी हैं....

- तनिश केडिया
बी बी ए, I -वर्ष

एक खत बचपन के नाम..

घर की अलमारी में एक एल्बम सी पड़ी थी,
खोल के देखा तो एक यादों की लड़ी थी।

शुरुआत माँ के कोख से हुई थी,
और खत्म पापा के गोद में हुई थी।

हर छोटी बात में रो गया था,
क्योंकि भैया! बचपन शुरू हो गया था।

खिलौनों से लेकर थप्पड़ तक हर तरह के चीजें अपनाई,
पर मेरी माँ मेरी शैतानियाँ नहीं रोक पाई।

मेरे हिस्से का खाना हर बार बेकार जाता,
क्योंकि मैं पड़ोसियों के वहाँ पेट भर आता।

हम तो खेलने से लेकर मस्ती की आड़ में,
क्योंकि उस जमाने में फोन नहीं था हाथ में।

हम थोड़े बड़े क्या हो गए
वह बचपन की यादें हमेशा के लिए सो गए।

-हिमांशु जैन
बी बी ए, II -वर्ष

तुझे चाँद बनना है

इन तारों के बीच तुझे चाँद बनना है (*2)
इन हैवानों के बीच तुझे इंसान बनना है
और वक्त तुझे देगा मौका,
आने वाले समय के लिए तुझे पहचान बनना है।

मैं कोई पहेली नहीं जिसे बुझा दिया जाए,
मैं कोई गीत नही जिसे गा दिया जाए,
लिख रहा हूँ मैं अपनी किस्मत अपने हाथों से,
अरे, मैं कोई इतिहास का पन्ना नहीं जिसे मिटा दिया जाए।

ढिट बन इंसान तू,
कर दिखा हर काम तू,
कहेगी दुनिया कहने दे,
समेटना है संसार तुझे,
बन जा आसमान तू।

-आयुष चौधरी
बी बी ए, II -वर्ष

झुखना तो सीख

याद करेगी दुनिया तू झुकाना तो सीख,
सलाम करेगी दुनिया तू कामियाब होना तो सीख,
घूमेगा वक़्त तू घुमाना तो सीख,
दुनिया लगेगी छोटी तू उड़ना तो सीख,
झुकेगी दुनिया तू झुकना तो सीख।
नाम भी होगा तेरा, तू नाम कमाना तो सीख,
दुआ करेगी दुनिया, तू दान करना तो सीख,
मेलेगी इज़्ज़त तुझे, तू मान करना तो सीख,
कि झुकेगी दुनिया, तू झुकना तो सीख।

-आयुष चौधरी
बी बी ए, || -वर्ष

शायरी

जो अच्छा लगता है उससे गौर से मत देखो, हो सकता है उसमे कोई बुरी नजर आजाए .. जो बुरा लगता है उसे गौर से देखो, हो सकता है उसमें कोई अच्छा नजर आया।

मुस्कुराना सिखना चाहिए,
रोना तो जिंदगी जो होता है, वह सिखाती है।

मुझसे नफ़रत करने वाले भी कमाल के लोग हैं,
मुझे देखना भी नहीं चाहते और नज़र भी मुझी पर ही रखते हैं।

-चिराग जैन

बी बी ए, I -वर्ष

कला

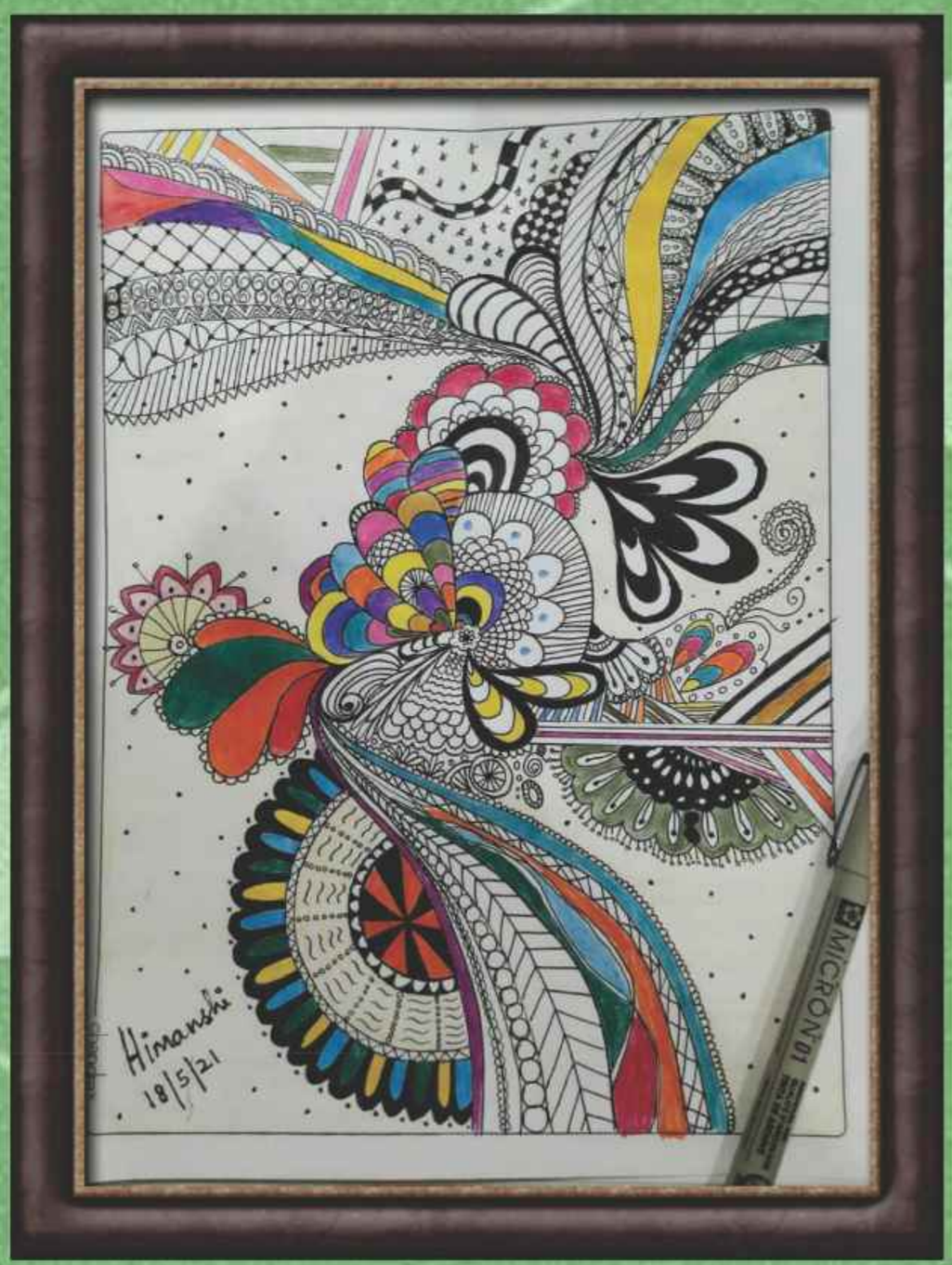

हिमांशी भंसाली
बी बी ए, । -वर्ष

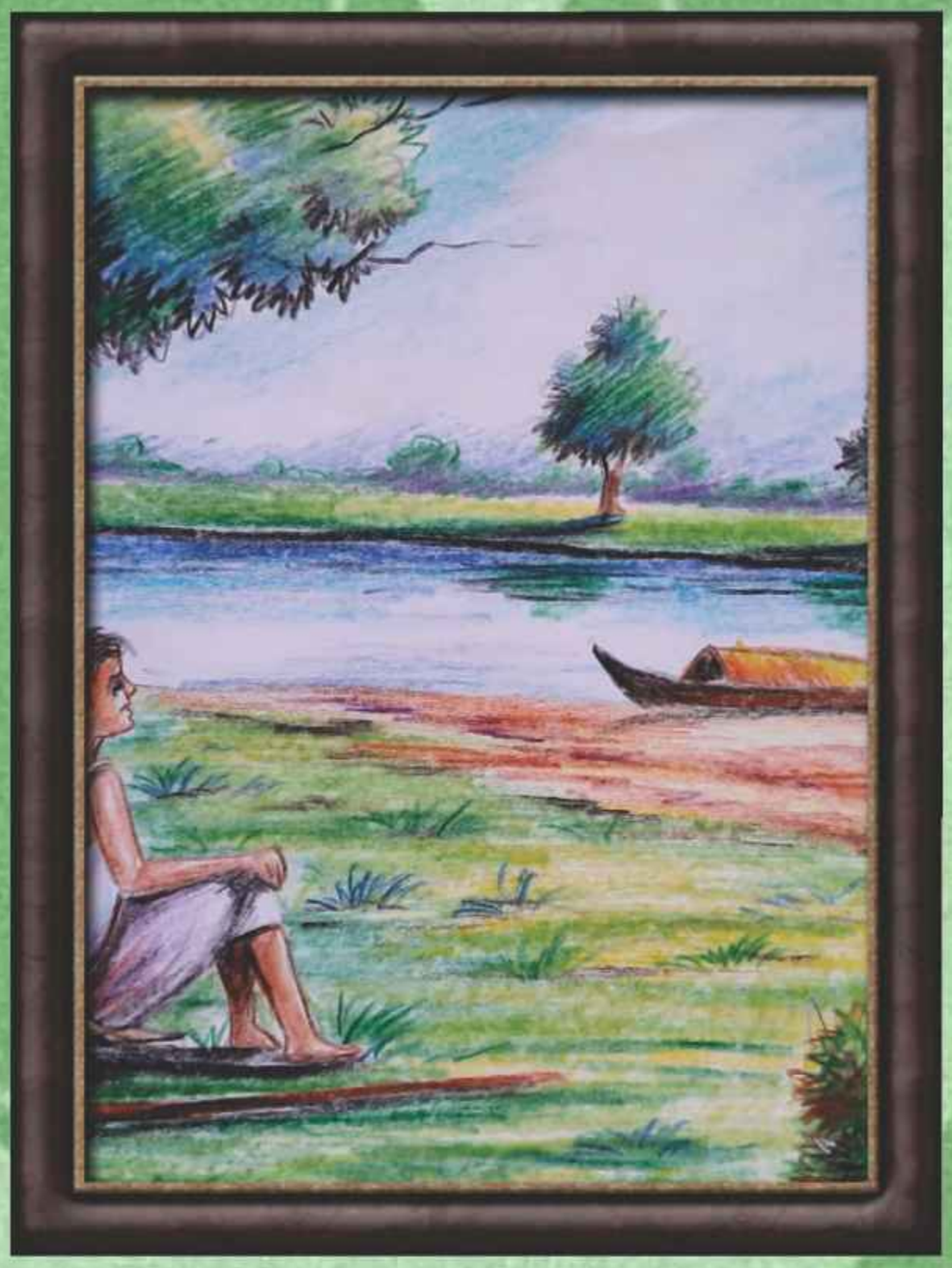

केशव मर्दा

दीपिका
बी बी ए, I -वर्ष

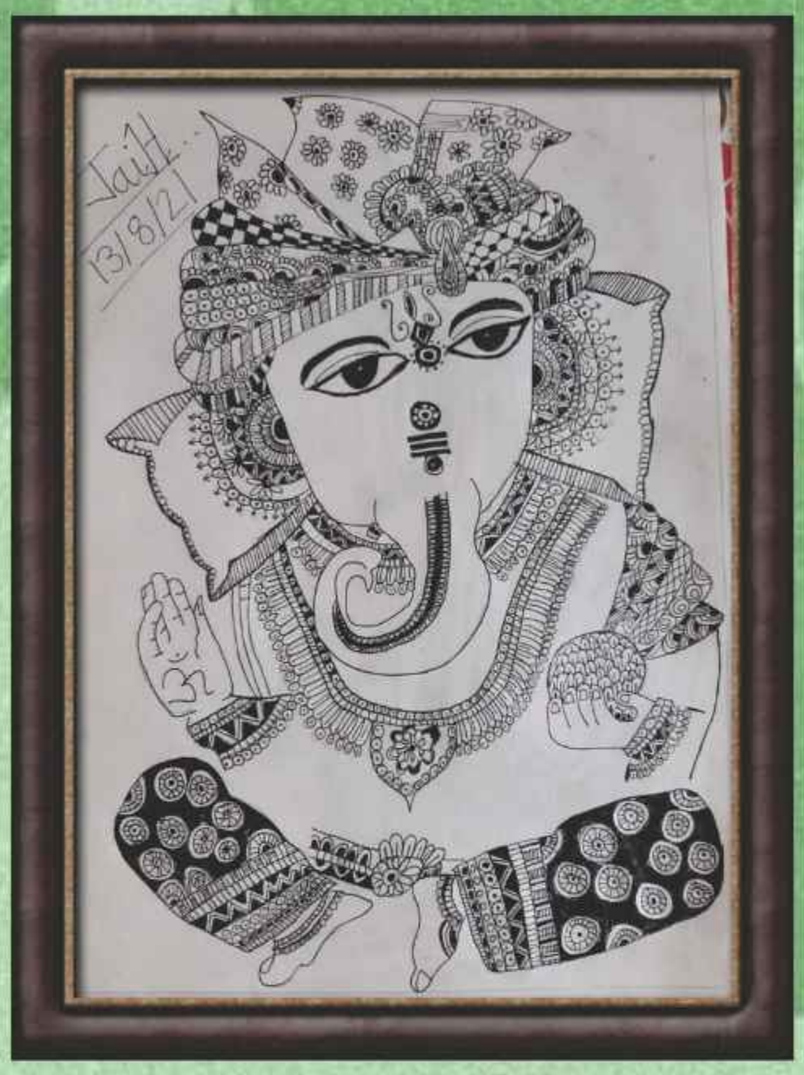

जयवर्धन हरितवाल

राजुल सुराणा
बी.ए.जे, III -वर्ष

चित्र प्रदर्शन

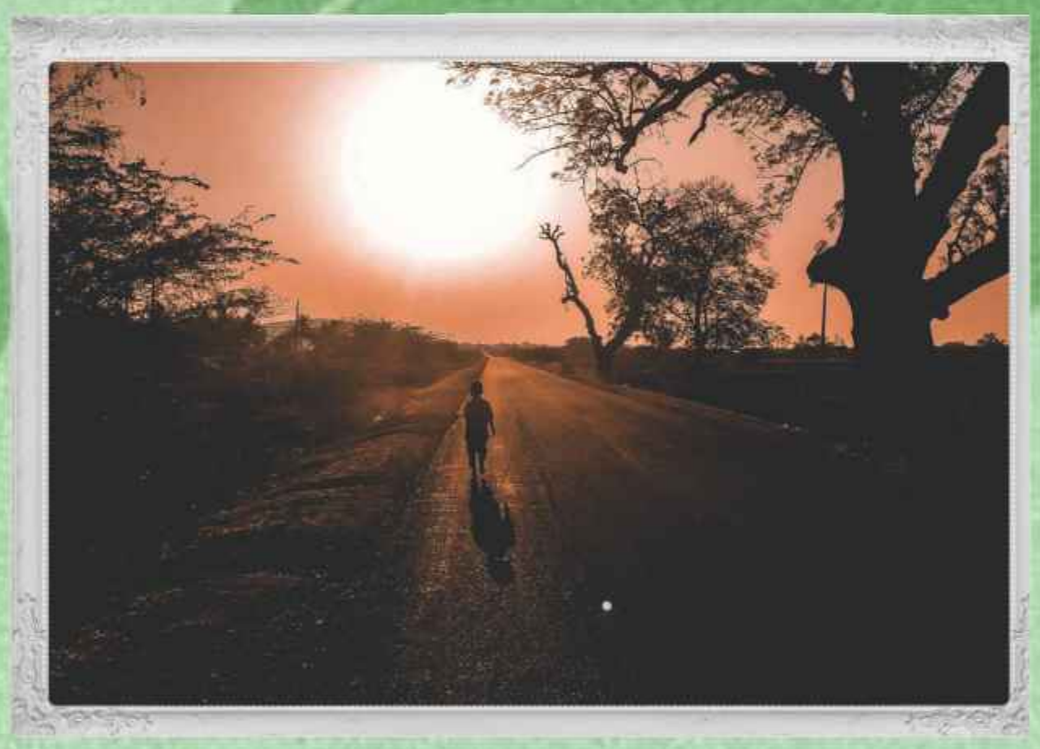

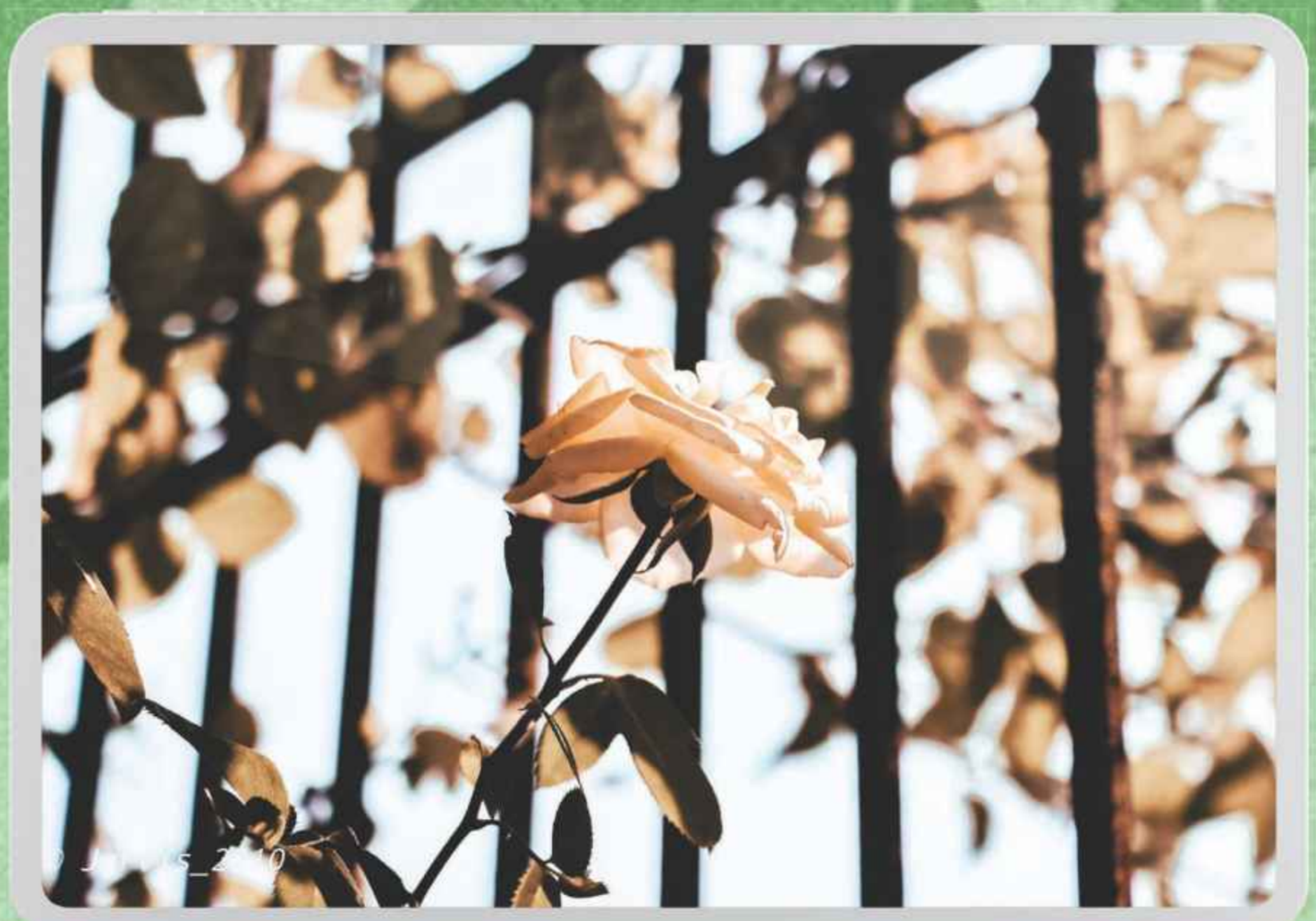

REDMI K20 PRO
48MP TRIPLE CAMERA

'संकल्प'

-एक नयी पहल

'संकल्प' एक संघ नहीं बल्कि हिन्दी विभाग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसकी शुरुआत हमारे पूर्व अध्यापकों दवारा की गयी थी, अब हमारी विभागाध्यक्षा प्रो. सुधा कनकानवर के नेतृत्व में हम इस संघ को आगे बढ़ाने का पूर्ण प्रयास कर रहे हैं। जिससे भारत की भाषा और सभ्यता को अक्षुण्ण रख सकें और लोगों में हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम, सम्मान एवं जागरूकता ला सकें।

'संकल्प' की शुरुवात जिस सोच और जिस उद्देश्य से की गई थी उसे पूर्ण रूप से सफल बनानेमें आज भी विद्यार्थी लगे हुए हैं। उनकी यही चाह और कोशिश संकल्प को हर साल और बेहतर बना रही है। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के साथ - साथ संकल्प अब संकल्प अपनी सीमा को धीरे धीरे आगे बढ़ रहा है और ऐसे ही बढ़ता रहेगा। आभास-पत्रिका , अलफ़ाज़ , ख़ुशी , ओपेन माइक, और भी कई विधाओं से लोगो तक पहुँचने के मौके मिल रहे हैं और संकल्प की कोशिश रहेगी की आगे भी मिलते रहे।

खुशी - इवेंट

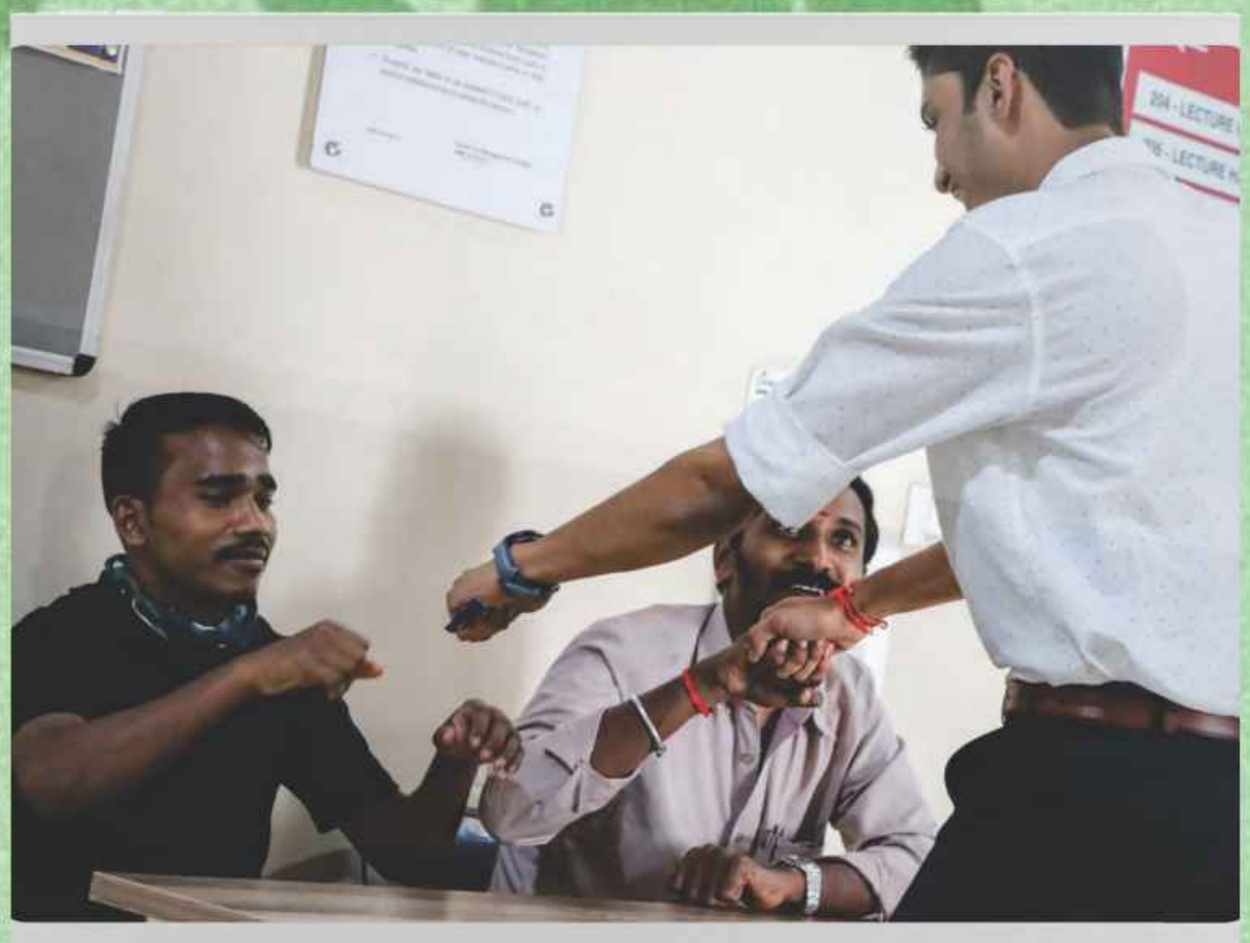

लास्या

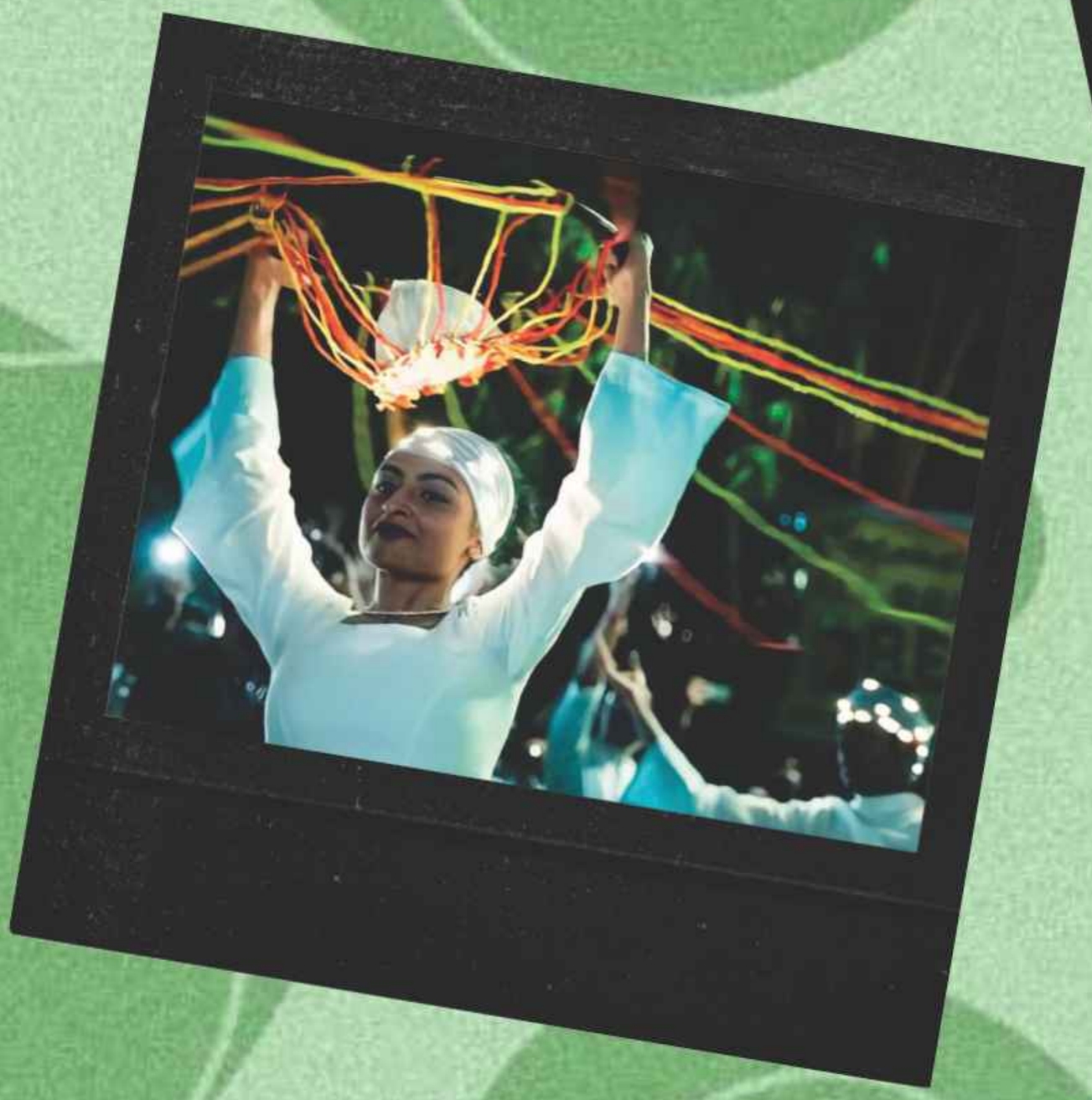

ऐक्यम्

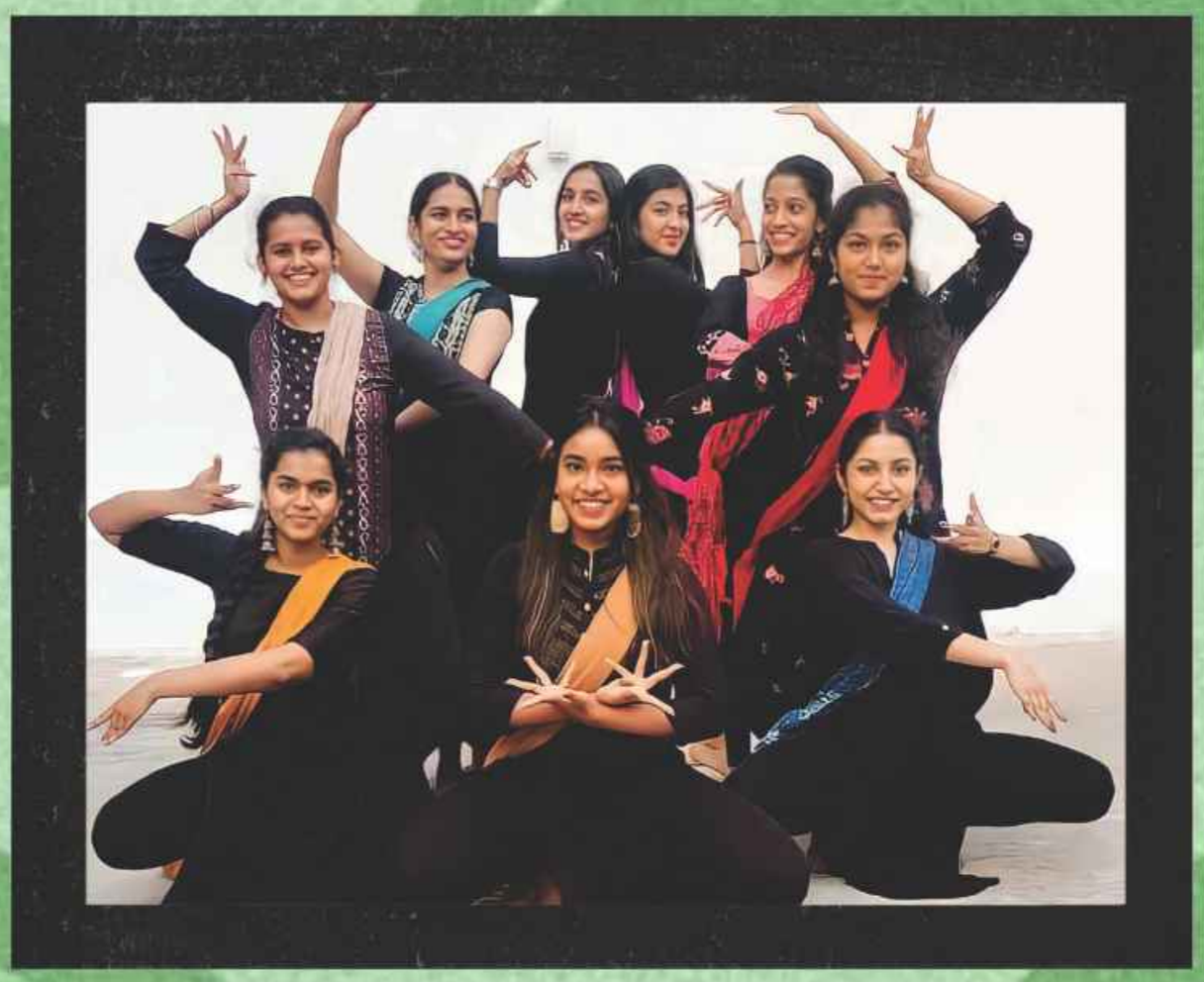

नर्तक

स्लेयर्स

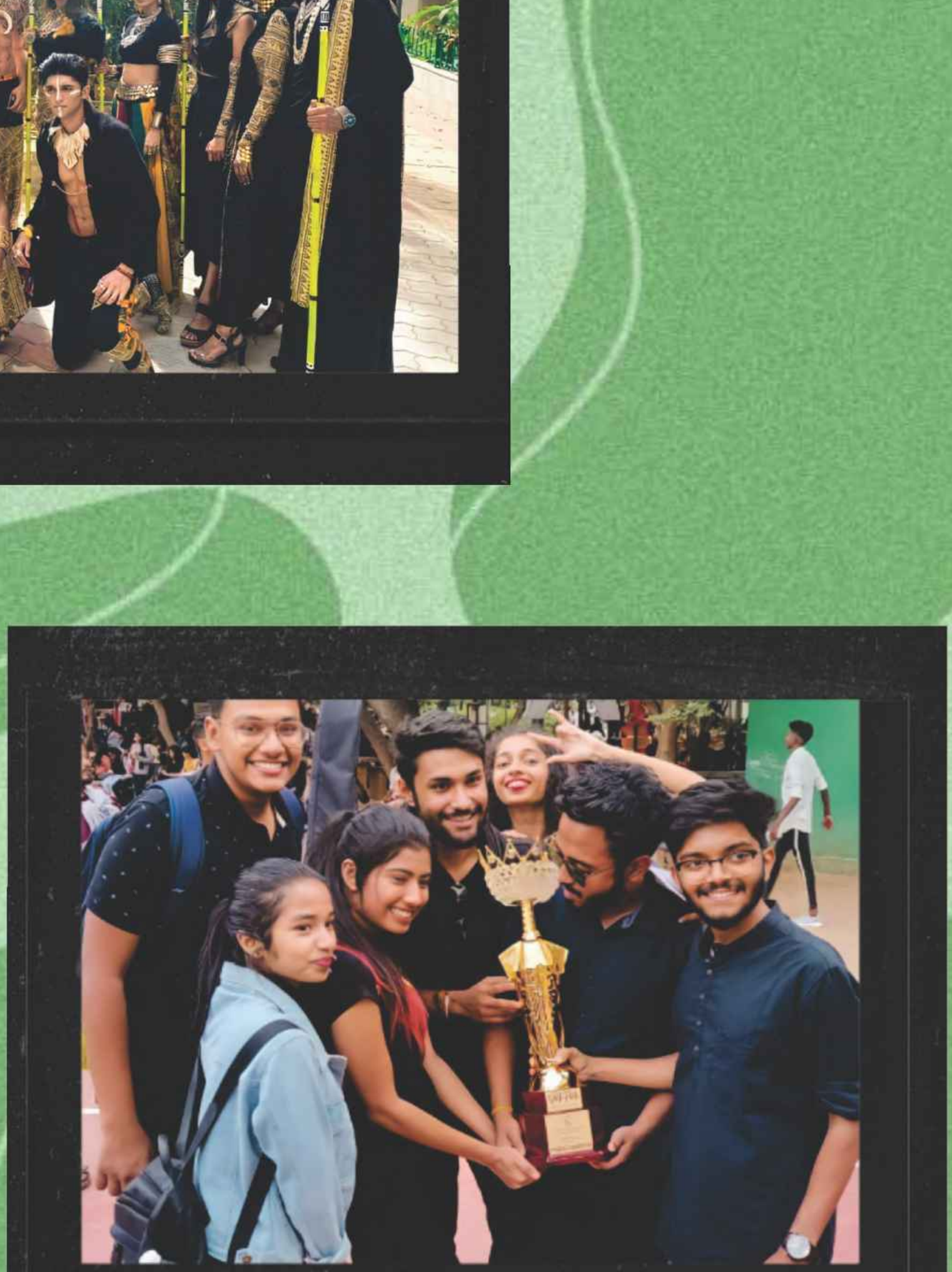

JAIN
DEEMED-TO-BE UNIVERSITY
CENTER FOR MANAGEMENT STUDIES

आभास

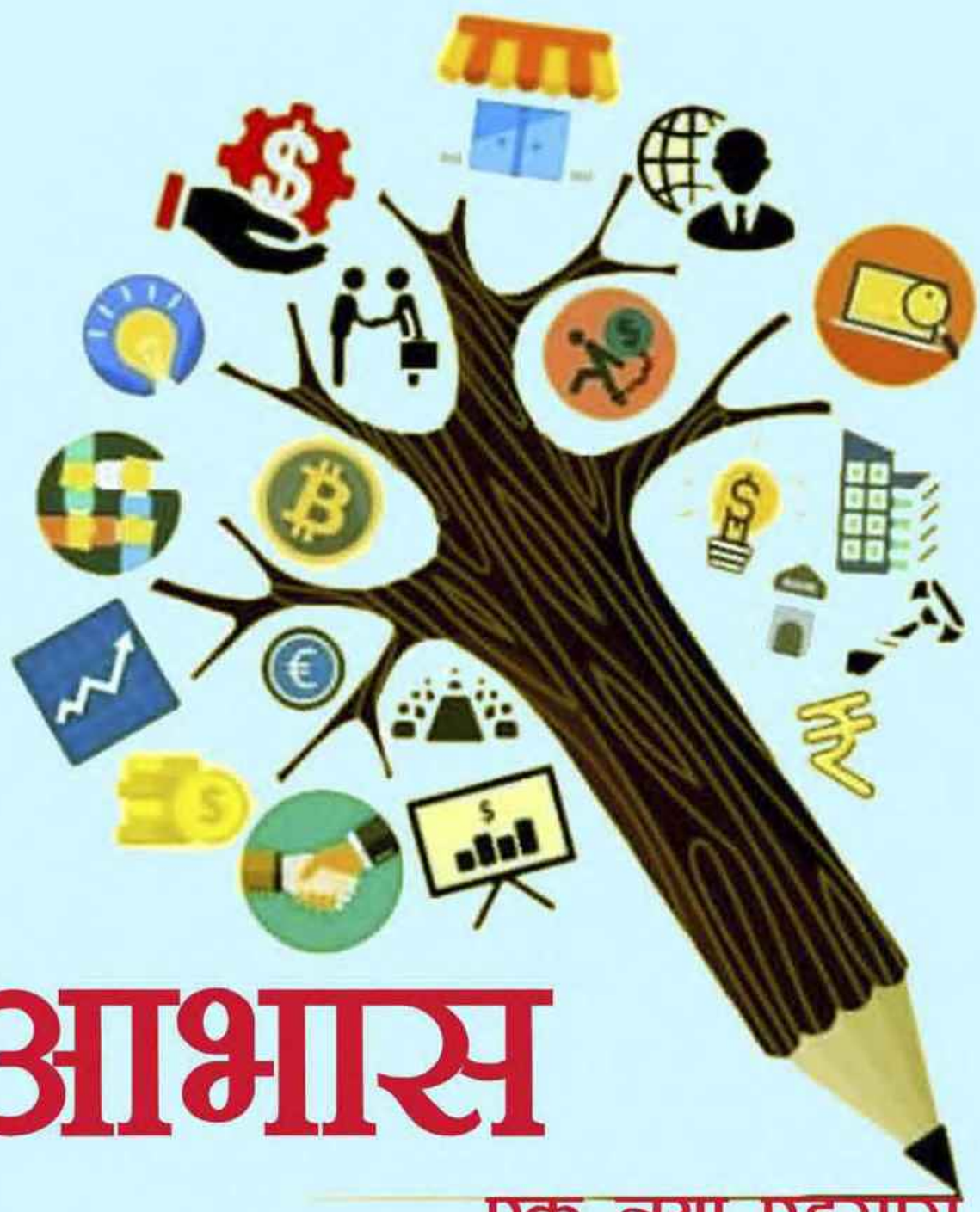

एक नया एहसास
2019-20

"अपने लक्ष्य को ऊँचा रखो और तब तक मत रुको जब तक आप उसे हासिल नहीं कर लेते है।"

हिन्दी विभाग की पत्रिका अंक 10

आभास-2019-20

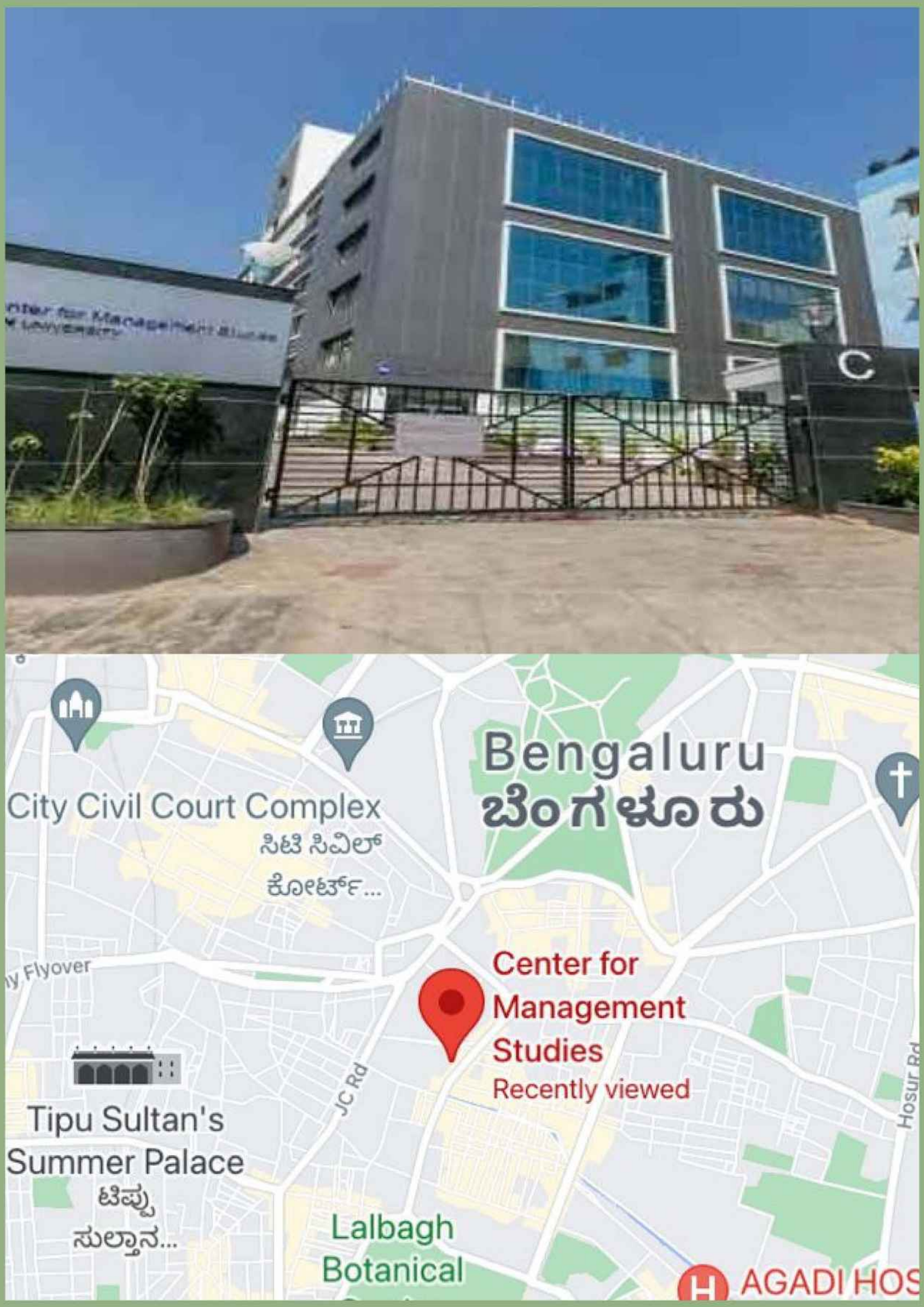

Campus : Center for Management Suties, JAIN (Deemed-to-be University)
133, Lal Bagh Main Road, Bengaluru, Karnataka 560027